तस्य धूरुषदं। अग्निं मिनं न संमिधानचा अते॥१२॥
द्रश्याना अक्रोविद्धेषु दीर्द्यत्। श्रुक्रवर्षामुदुना
यः स ते धियं। पुजाअमे संवासय। आश्रीअ प्रमुनिः
सह। राष्ट्राण्यसमाआधेहि। यान्यासंत्सवितुः सवे।
मही विश्यत्वी सदने च्यतस्य। अर्वाचीरातं धरुणेरयीगां। अन्तर्वत्वी जन्यं जातवेदसं। अध्वराणां जनयथः
पुरागां॥१३॥

आरे। हतं द्शतश्यक्षरीर्ममे। ऋतेनाम्रआयुषा वर्षमा सह। ज्याग्जीवन्तउत्तरामुत्तराश्यमा। दर्श-महं पूर्णमासं यज्ञं यथा यजै। ऋत्वियवतीस्था अमि-रेतसी। गर्भे द्धायान्ते वामहं ददे। तत्सत्यं यदीरं विस्थः। वीरं जनयिष्ययः। ते मत्पातः प्रजनिष्येथे। ते मा प्रजाते प्रजनिष्ययः॥ १४॥

पुजया प्रमुभिर्म ह्मवर्षसेन सुवर्ग लोके। अन्तात्मत्यमुपैमि। मानुषाहै व्यमुपैमि। देवी वाचं यच्छामि।

शक्तैर्मिमिन्धानः। उभी लोकी सनमहं। उभयालीकयार्चध्या। अतिमृत्युं तराम्यहं। जातवेदोभुवनस्य रेतः। इह सिच्च तपसो यर्जनिष्यते॥ १५॥

अग्रिमेश्रत्याद्धिइव्यवाहं। श्रमीगभीजनयन् यो